Dr. Vandana Suman
Associate Professor
Dept. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara
B. A. Part - 1 (Hons)
Paper - I
Indian Philosophy

"Chārvāka Ethics"
(चार्वाक का नीतिशास्त्र)

चार्वाक एक नास्तिक, अनीश्वरवादी, प्रत्यक्षवादी तथा सुखवादी दर्शन है। चार्वाक के अनुसार सुख ही जीवन का अन्तिम उद्देश्य है।

चार्वाक का सुखवाद यूरोपीय स्वार्थमूलक सुखवाद (Egoistic Hedonism) से मेल खाता है। स्वार्थमूलक सुखवाद की तरह चार्वाक भी स्वार्थ सुखवाद को ही जीवन का चरम लक्ष्य मानता है। चार्वाक दर्शन का मूलमन्त्र है - 'Let us eat, drink and be merry for tomorrow we may die.' इतना ही नहीं उसने तो यहाँ तक कहा है कि -

"यावत् जीवेत् सुखं जीवेत्
ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत्।"

चार्वाक के सुखवाद के अनुसार मनुष्य का उद्देश्य यह होना चाहिए कि वह वर्तमान जीवन में अधिक से अधिक जितना सुख प्राप्त कर सकता है और अपने दुःखों को अधिक से अधिक जितना कम कर सकता है। सफल जीवन वही है जिसमें अधिक से अधिक सुख भोग होता है। अच्छा काम वही है जिससे दुःख की अपेक्षा अधिक सुख मिलता है। बुरा काम वही है जिससे सुख की अपेक्षा अधिक दुःख मिलता है। चार्वाक इन्द्रिय सुख पर अत्यधिक जोर देता है। बौद्धिक सुख शारीरिक सुख से श्रेष्ठ नहीं है।

कुछ भारतीय दार्शनिकों के अनुसार पुरुषार्थ चार है -

अर्थ, काम, धर्म और मोक्ष। चार्वाक धर्म और मोक्ष को स्वीकार नहीं करते हैं क्योंकि मोक्ष का अर्थ पूर्ण रूप से निर्वाण है जो मृत्यु होने से ही संभव हो सकता है। कोई भी बुद्धिमान व्यक्ति अपनी मृत्यु की कामना नहीं करता। इनके अनुसार बुद्धिमान मनुष्य को अर्थ और काम के लिए ही प्रयत्न करना चाहिए। चार्वाक के अनुसार काम की प्राप्ति ही जीवन का एकमात्र उद्देश्य है।

चार्वाक शास्त्रों को श्रुति धर्म को तथा परलोक को नहीं मानते इसलिए वे यज्ञादि कर्मों का भी विरोध करते हैं। इनके अनुसार स्वर्ग पाने के लिए नरक से बचने के लिए या प्रेतात्मा की तृप्ति के लिए वैदिक कर्म करना सर्वथा व्यर्थ है। इनका कहना है कि — 'यदि श्राद्ध में अर्पित किया हुआ भोजन प्रेतात्मा की भूख मिटा सकता है तो कोई पथिक भोजन की वस्तु साथ-साथ क्यों लिए फिरता है। उसका कुटुम्ब क्यों नहीं उसकी क्षुधा-शांति के लिए उसके घर पर वही भोजन अर्पित कर देता है? नीचे की कोठरियों में अर्पित किए हुए भोजन से ऊपर रहने वालों की भूख क्यों नहीं मिट जाती है? पुरोहितों का यदि वास्तविक विश्वास है कि यज्ञ में बलिदान किया हुआ पशु स्वर्ग पहुँच जाता है तो वे क्यों नहीं पशुओं के बदले अपने माँ-बाप की बलि कर देते हैं।

साथ है भी स्तुति का करें। कुछ लोग सांसारिक सुखों के त्याग का उपदेश देते हैं। उनका कहना है कि यदि कोई व्यक्ति सुखोपभोग की कामना करता है तो उसे साथ में कुछ दुःख अवश्य उठाना पड़ेगा। इसलिए मनुष्य को सुख की कामना तथा पाशविक प्रवृत्तियों का दमन करना चाहिए। चार्वाक इस बात को नहीं मानता है। उनके अनुसार दुःख के डर से सुख का त्याग करना मूर्खता है। मछली में काँटा रहने के कारण कोई व्यक्ति मछली खाना नहीं छोड़ सकता। अनाज के ऊपर भूसे के लगे होने के डर से कोई व्यक्ति खेत में बीज का बोना नहीं बन्द करता। मधुमक्खी के आनन्द-दायक प्रभाव से कौन नहीं लाभान्वित होना चाहता? यद्यपि भी अखीर चल से सम्भव है। सुख - दुःख का साथ रहता है इसलिए मानव का कर्तव्य होना चाहिए कि वह सुख को दुःख से अलग कर सुख का अधिक उपभोग करे। जो व्यक्ति दुःख से डरकर सुख को छोड़ता है वह बेवकूफ है। चार्वाक के अनुसार पारलौकिक सुख और आध्यात्मिक सुख को अपनाने के उद्देश्य से इस जीवन के सुख का त्याग करना पागलपन है।

हमारा अस्तित्व इसी शरीर और इसी जीवन तक सीमित है। अतः मानव को वर्तमान जीवन में अधिक से अधिक सुख प्राप्त करना चाहिए

LIC

कल क्या होगा ? यह अनिश्चित भविष्य की आशा में वर्तमान के निश्चित कबूतर को नहीं छोड़ना । आकाश में उड़ते स्वर्ग के निश्चित कांटे [illegible] भविष्य में आने वाले धन की प्राप्ति के लिए छोड़ देना मूर्खता है ।
अतः चार्वाक के अनुसार – 'we should fully enjoy the present.' शराब, कामिनी और शारीरिक सुख चार्वाक सुखवाद के केन्द्र बिन्दु हैं।
चार्वाक भी Ego और Hedonism की तरह सुखों में गुणात्मक भेद को नहीं स्वीकार करता है। उनके अनुसार मदिरापान से प्राप्त सुख और कविता के निर्माण से प्राप्त सुख समान है।
चार्वाक का समाज दर्शन भी सुखवादी दृष्टिकोण को स्पष्ट करता है। वह एक ऐसे समाज की सृष्टि करता है जिसमें ईश्वर, स्वर्ग, नरक, धर्म का कोई स्थान नहीं है तथा जिसमें मनुष्य निजी सुख के लिए ही प्रयत्नशील रहता है। चार्वाक का जड़वादी समाज शोषण भेद से अछूता रहता है। जिसके फलस्वरूप ऊँच और नीच का भेद अपने आप खंडित हो जाता है।

चार्वाक के सुखवाद के विरुद्ध अनेक आलोचनायें की गयी हैं, जो इस प्रकार हैं –

1. चार्वाक के अनुसार

LIC

व्यक्ति को सुख की कामना करनी चाहिए, उनका यह मत विरोधपूर्ण है। यदि हम सर्वदा सुखानुभूति की चिन्ता करते रहें तो सुख को प्राप्त करना सम्भव नहीं है। अतः सुख प्राप्ति का सबसे अच्छा तरीका है सुख को भूल जाना।

चार्वाक का सुखवाद व्यक्ति को निजी सुख प्राप्त करने का आदेश देता है। यह तभी सम्भव है, जब मनुष्य पूर्ण - रूपेण स्वार्थी हो। परन्तु ऐसी बात नहीं पायी जाती मनुष्य में स्वार्थ - भावना के साथ ही साथ परार्थ की भावना भी निहित है। माता-पिता अपने बच्चों के सुख के लिए अपने सुख का बलिदान करते हैं। एक देशभक्त मातृभूमि की रक्षा के लिए अपने जीवन का उत्सर्ग कर डालता है। हमारे बहुत से काम दूसरों को सुख प्रदान करने के उद्देश्य से संचालित होते हैं।

3. चार्वाक के सुखवाद में सभी प्रकार के सुख को एक ही धरातल पर रखा गया है। जो सर्वथा गलत है क्योंकि सुखों में गुणात्मक भेद होता है। आदेशपान से प्राप्त सुख अध्ययन से प्राप्त सुख से निम्नकोटि का है। एक कलाकार अपनी कलात्मक रचनाओं की सृष्टि से जो सुख प्राप्त करता है वह शारीरिक सुख से उच्चकोटि का है। अतः चार्वाक ने सुखों के बीच गुणात्मक भेद न मानकर भारी भूल की है।

4. चार्वाक का सुखवादी
विचार समाज के कल्याण में बाधक नहीं
बल्कि सहायक है। समाज का कल्याण तभी
संभव है, जब हम अपने स्वार्थ
का त्याग और बलिदान करें। परन्तु
चार्वाक व्यक्तिगत आदिमता [illegible]
को [illegible] अपनों के लिए भी देखा
है।

5. चार्वाक के आचारशास्त्र
में नैतिकशास्त्र [illegible] [illegible]
धार्मिकता का आधार आत्मनियंत्रण
को [illegible] चार्वाक [illegible] [illegible]
[illegible] होता है। इनके आचारशास्त्र
में [illegible] आत्मा, पाप, पुण्य का कोई
स्थान नहीं।

6. जीवन को
चलाने के लिए सुखों में प्रत्यक्ष
प्रमाण अवलम्बन है। चार्वाक सभी
[illegible] के मूल्यों का खण्डन करता है
और [illegible] [illegible] और अनुभव
विचार भी निराधार हो जाता है।
मूल्यों के अभाव में मानवीय जीवन
की कल्पना करना मानवीय जीवन
को पशुतुल्य बनाना है।

फिर भी चार्वाक इन सब बातों के होते
अन्य भारतीय दर्शनों से कम
नहीं है। चार्वाक दर्शन का महत्व
[illegible] पाई जाती है। एक तो चार्वाक
[illegible] दार्शनिक समस्याएँ
[illegible] इनके कारण

अनेक दार्शनिक रूढ़-विश्वास से बच सके और अपने विचारों का युक्ति युक्त विवेचन कर सके। इसके लिए भारतीय दर्शन चार्वाक मत का हमेशा ऋणी रहेगा।

सुखवाद के कारण ही चार्वाक की निंदा हुयी है किन्तु सुखभोग कोई घृणा का विषय नहीं है। चार्वाकों के दो वर्ग थे- धूर्त चार्वाक तथा सुशिक्षित चार्वाक। सुशिक्षित चार्वाक उत्कृष्ट सुखों का अनुसरण करते थे। इसके लिए वे ललितकलाओं का अभ्यास करते थे। धूर्त चार्वाक इन्द्रिय सुख पर अधिक जोर देते थे।

अतः सुख को जीवन का लक्ष्य मानने के कारण सभी चार्वाक को घृणित समझना उचित नहीं है।